संस्थापित १८६७ ई०

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

एक प्रति ₹ २.००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) आजीवन शुल्क ₹ १०००

● वर्ष : १२३ ● अंक ११ ● १३ मार्च २०१८ चैत्र कृष्ण पक्ष एकादशी संवत् २०७४ ● दयानन्दाब्द १६३ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११८

विश्व हितैषी दयानन्द सरस्वती

मानव जाति के प्रकाश स्तम्भो में महर्षि दयानन्द का स्थान चिरन्तम, स्थायी अक्षुण्ण एवं सर्वादेशिक और सार्वजनिक है। उनको यह गौरव उन की दिव्य और विश्वहित चिन्ता के महान् आदेशों के कारण प्राप्त रहेगा।

महर्षि युग– की परिस्थितियों का सभी को परिज्ञान है। भातत की मूर्धन्य चेतना मूर्छित हो चुकी थी, अज्ञान तिमिर ने सत्य पर काली धारायें घेर रक्खी थीं, सारा समाज बुद्धि कुण्ठित हो चुका था विचार शक्ति और चिन्तन चेतना समाप्त हो चुकी थी, रूढ़िवाद, अन्धविश्वास, सम्प्रदायवाद ने भारतीय समाज एवं जन–जीवन को पंगु, अर्द्ध चेतन और दिग्भ्रमित कर दिया था। देश का नेतृत्व पाखण्डी, दम्भी और निहित स्वार्थी तत्वों के हाथ में चला गया था। ऐसी स्थिति में विदेशी शक्तियों के आक्रमण आरम्भ हुए और देश दासता की बेड़ियों में आबद्ध हो गया।

महर्षि की आत्मा में विश्व मानवता के लिए पीड़ी थी, उनकी वैदिक प्रार्थनओं में सम्पूर्ण मानवता के लिये चिन्तन, सुधार और उपकारी भावना थी और यदि विश्व इतिहास के पृष्ठों को पलटने का प्रयास करें तो एकमात्र महर्षि ही ऐसे व्यक्ति मिलते है जो सब से पहले विश्व एकता, *विश्व मानवता* और चक्रवर्ती साम्राज्य के रूप में विश्व के राजनैतिक संगठन की परिकल्पना कर

सके थे।

महर्षि अनुभव करते थे कि सारी मानव जाति एक उसकी संस्कृति भी एक और अविभाज्य है। इसी एकता की भावना से महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश में मानव समाज की चाहे वह भारतीय हो या भारतेतर समालोचन की और समस्त मानवता की एक विचारधारा, वैदिक विचारधार का सन्देश देने का प्रयास किया।

महर्षि की विश्वादी विचारधारा का प्रचार जब अमरीका तक पहुंचा तब वहां के प्रबुद्ध व्यक्तियों ने ईसाई धर्म के पाखण्डों से मुक्ति पाने के लिए महर्षि कीं सेवा में पत्र लिखे और आशीर्वाद मांगे।

थियासोफिकल सोसाइटी की साधारण सभा ने महर्षि दयानन्द को जो पत्र अमेरिका से भेजे थे, उसमें उन्हें अपना गुरू स्वीकार किया था और ईसाइयत के पाखण्ड से बचाने में सहयोग की प्रार्थना की थी। उस समय अमेरिका के राजनीतिक जीवन पर ईसाई धर्म का व्यापक प्रभाव था, इस दृष्टि से अमेरिका के धार्मिक और राजनीतिक दोनों क्षेत्रों के उत्पीड़न को दूर करने में महर्षि के सहयोग का अत्यधिक महत्व समझना चाहिए। थियासोफिकलसोसायटी का बाद में आर्यसमाज से सम्बन्ध तथा विच्छेद एक अलग घटना है, परन्तु इससे स्पष्ट है कि महर्षि की आवाज से अमेरिका की जनता प्रभावित थी।

इसी प्रकार जर्मन विद्वानों के साथ महर्षि का पत्राचार और वेद ग्रन्थों की पाण्डुलिपियों को वहां से महर्षि द्वारा मंगाया जाना, मैक्सूलर के वेद–भाष्य की आलोचना और उनके वेद तथा भारत सम्बनी दृष्टि को परिवर्तित करना आदि ऐसी बातें हैं जिनका उस समय की दृष्टि से अत्यधिक महत्व है। महर्षि दयानन्द की शक्ति से प्रभावित एन्ड्रयूजैशन से आर्यसमाज को एक जलती भट्टी में पश्चिम और पूर्व का समस्त पाखण्ड एवं अत्याचार भस्मसात् हो जायगा और एक नयी मानव शक्ति का उदय होगा।

महर्षि विश्व के अन्दर अपने विचारों के प्रचार–प्रसार से परिचित थे, वे जानते थे इंग्लैण्ड और दूसरे देशों से आने वाले ईसाई–पदारी भारत से बाहर जाकर भारत की दृष्टि को समझने का प्रयत्न करेंगे और हम देखते हैं कि बाइबिल और बाद में कुरान के भाष्यों में महर्षि के बुद्धिवाद का असर हो रहा है।

इस परिवर्तन के होते हुए भी महर्षि की

–डॉ0 धीरज सिंह आर्य, सभा प्रधान

दृष्टि में भारत विश्व का केन्द्र था और वे भारतवासियों को झकझोर कर जगा रहे थे। महर्षि ने कहा ६ हजार वर्ष से (महाभारत से एक हजार वर्ष पूर्व से (महाभारत से एक हजार वर्ष पूर्व से) सोने वाले भारतीयो जागो, लुटेरे तुम्हारे घर में घुसे हुये हैं, तुम्हे लूट रहे हैं और तुम सो रहे हो, याद करो अपने गौरव को–

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।।

महर्षि के आघोष का देश पर और समाज पर व्यापक प्रभाव पड़ा। पीड़ित संत्रस्त और लूटी जा रही भारतीय जनता ने महर्षि को अपने त्राता के रूप में देखा और एक सन्तोष की सांस ली।

महर्षि की कार्याशैली, भारतोद्धार वेदोद्धार आदि से सभी परिचित हैं। परन्तु सबसे अधिक अस्पृश्यता–निवारण और नारी उत्थान उनके ऐसे कार्य थे जिनसे जनता–जनार्दन सबसे अधिक प्रभावित हुआ। अस्पृश्यता भारतीय संविधान में अपराध घोषित है, परन्तु इस मंजिल तक पहुंचने के लिए महर्षि अनुयायियों और आर्यसमाज के कितने कष्ट उठाये, बलिदान दिये यह अकथ कहानी है। इसी प्रकार समाज में नारी के महत्व और उत्थान की दिशा में उनका नेतृत्व और उत्थान की दिशा में उन का नेतृत्व सदैव अविस्मरणीय हरेगा। अमेरिका और योरप में आज नारी स्वातन्त्रंय की गूंज उठी है, उसमें स्वच्छन्दता की अधिकता हैं और उसे मर्यादित किया जाना चाहिए। परन्तु पुरूष समाज द्वारा नारी के शोषण की जिस भावना का इस आन्दोन द्वारा विरोध हो रहा है, उस भावना को सौ सवा सौ वर्ष पूर्व महर्षि अच्छी प्रकार अनुभव करते थे। आज विश्व महिला वर्ष मना चुका है, उसका आदि मूल महर्षिवर्ष मना चुका है, उसका आदि मूल महर्षि के कार्यक्रम में निहित था। भारत में नारी को आज जो उच्चासन प्राप्त है उसका आरम्भ महर्षि दयानन्द के विचारों और आर्यसमाज के स्त्री शिक्षा आन्दोलन से ही हुआ है।

इसी प्रकार भारतीय किसानों की दयनीय अवस्था पर महर्षि की अश्रुधारा बहती रही, किसानों की दयनीय दशा महर्षि ने लिखा जो किसान सबका अन्नदाता है, वह स्वयं भूखा बना रहे, यह चिन्तनीय और दुःखद है।

शेष पृष्ठ ७ पर

डॉ. धीरज सिंह
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

सम्पादकीय.....

''गोरक्षा'' का पालन व्रत

आज देश में गो मां के ऊपर बहुत बड़ा अत्याचार हो रहा है। ऋषियों के देश में राष्ट्र माता गो-की दशा अतीव दयनीय हो गई है, गो मां की विपत्ति को देखकर बाल ब्रह्मचारी योगीराज महर्षि दयानन्द जी ने भी अतीव हार्दिक वेदना अनुभव की थी तथा मां की रक्षा हेतु ''गी करूण विधि'' रचकर तैयार की थी। जिसका दूध हमने दिया है यदि उस पर हमारे रहते अत्याचार होता है तो हमारा जीना निरर्थक है।

लोग कहते है कि बाबा गांधी ने कहा था कि स्वतन्त्रता मिलने के बाद अपनी पहली कलम से गोहत्या बन्द कर दूंगा। गांधी जी के जीवन वृत तथा भारत के इतिवृत से ज्ञात होता है कि उन्होंने गोहत्या बन्दी के लिए कभी भी कोई प्रभावी कदम नही उठाया आज गोरक्षा जैसा अतीव महत्वपूर्ण कार्य स्वतन्त्रता मिलने के बाद भी सम्भव न हो सका।

अंग्रेजी काल से भी अधिक मात्रा में आज गौए कट रही है किन्तु, हम आर्य लोग मूक दर्शक बनकर देख रहे है। गोहत्या के कारण गायो की संख्या तथा दुग्ध उत्पादन में अत्यधिक न्यूनता आ गई है। भारत स्वतन्त्र होने पर भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ0 रोजेन्द्र प्रसाद ने गांधी जी को बताया कि 'मेरे पास हजारों की संख्या में तार व सन्त आये हैं कि देश स्वतन्त्र हो गया है।

अतः गो हत्या बन्द की जाये '' तब बाबा गांधी ने जो उत्तर दिया वह प्रत्येक विचारशील आर्य के लिए ध्यान से पढ़ने योग्य है कि ''हम किसी पर गो हत्या न करने के कानून को बलात थोप नहीं सकते जो गोरक्षा की मांग करते है उनको चाहिए कि इस देश में मुसलमान, ईसाई, पारसी भी बसते हैं हम उनके साथ जबरदस्ती नहीं कर सकते'' गांधी का एक और वक्तव्य ध्यान में पढ़ने योग्य है।

जो कि दैनिक प्रातप लाहौर में **26.12.24** को छपा था गांधी ने कहा था'' मैं कट्टर सनातनी धर्मी हूं, परन्तु, एक मुसलमान को अधिकार दूंगा कि यदि उसका विश्वास है तो वह निःसन्देह गाय, मांस खाए, यदि कुरान किसी की गोबध की आज्ञा देता है तो मैं कौन हूं जो उन्हें जबरदस्ती मना कर सकूं।

आर्य बन्धुओ! अब आप विचार कीजिए कि बाबा गांधी मनुष्य कहलाने के अधकारी है। यदि है तो क्या मनुष्यता का लक्षण यही है कि मूक पशुओं पर आरा चले तथा उसके ऊपर गरम पानी डालकर ऊपर से डण्डों से पिटाई करके जीवित ही ढाले उतारी जाएं। किन्तु एक मनुष्य कहाने वाले व्यक्ति का हृदय करूणा में द्रवित हो बल्कि वे रक्त से सब हुए धन की पाने से अत्यन्त अनान्दित हो मैं ए नरतन धारी जन्तुओं को कभी भी मनुष्य वाणी में वही मिल सकता है।

ये सबके सब गोहत्यारे, नास्तिक, मांसभक्षी तथा महा पानादि करने वाले दुष्कर्मी है इनसे कोई आशा करता दुरदशा मात्र है। अतः आर्यों जिस प्रकार भारत की स्वतन्त्रता आर्य वीरों के बलिदान से मिली उसी प्रकार गोरक्षा के लिए भी एक बहुत बड़े आन्दोलन की आवश्यकता है।

– सम्पादक

गतांक से आगे .....

सत्यार्थ प्रकाश

अथ पञ्चम समुल्लासारम्भः

अथ वानप्रस्थसंन्याविधिं वक्ष्यामः

जब संन्यासी मार्ग में चले तब इधर-उधर न देख कर नीचे पृथिवी पर दृष्टि रख के चले। सदा वस्त्र से छान कर जल पीये, निरन्तर सत्य ही बोले, सर्वदा मन से विचार के सत्य का ग्रहण कर असत्य को छोड़ देवे।।१।।

जब कहीं उपदेश व संवादादि में को संन्यासी पर क्रोध करे अथवा निन्दा करे तो संन्यासी को उचित है कि उस पर आप क्रोध न करे किन्तु सदा उसके कल्याणार्थ उपदेश ही करे और एक मुख के, दो नासिका के, दो आँख के और दो कान के छिद्रों में बिखरी हुई वाणी को किसी कारण मिथ्या कभी न बोले।।२।।

अपने आत्मा और परमात्मा में स्थिर अपेक्षा रहित मद्य मांसादि वर्जित होकर, आत्मा ही के सहाय से सुखर्थी होकर इस संसार में धर्म और विद्या के बढ़ाने में उपदेश के लिए सदा विचरता रहै।।३।।

केश, नख, दाढ़ी, मूँछ का छेदन करवावे। सुन्दर पात्र, दण्ड और कुसुम्भ आदि से रंगे हुए वस्त्रों को ग्रहण करके निश्चितात्मा सब भूतों को पीड़ा न देकर सर्वत्र विचरे।।४।।

इन्द्रियों को अधर्माचरण से रोक, राग-द्वेष को छोड़, सब प्राणियों से निर्वैर वर्त्तकर मोक्ष के लिए सामर्थ्य बढ़ाया करे।।५।।

कोई संसार में उसको दूषित वा भूषित करे तो भी जिस किसी आश्रम में वर्त्तता हुआ पुरूष अर्थात् संन्यासी सब प्राणियों में पक्षपातरहित होकर स्वयं धर्मात्मा और अन्यों को धर्मात्मा करने में प्रत्यन किया करे। और यह अपने मन में निश्चित जाने कि दण्ड, कमण्डलु और काषायवस्त्र आदि चिन्ह धारण धर्म का कारण नहीं है। सब मनुष्यादि प्राणियों की सत्यापदेश और विद्यादान से उन्नति करना संन्यासी का मुख्य कर्म है।।६।।

क्योंकि यद्यपि निर्मली वृक्ष का फल पीस के गदरे जल में डालने से जल का शोधक होता है, तदपि बिना डाले उसके नामकथन वा श्रवणमात्र से उसका जल शुद्ध नहीं हो सकता।।७।।

इसलिये ब्राह्मण अर्थात् ब्रह्मवित् संन्यासी को उचित है कि ओंकारपूर्वक सप्व्याह्मतियों से विधिपूर्वक प्राणायाम जितनी शक्ति हो उतने करे। परन्तु तीन से तो न्यून प्राणायाम कभी न करे, यही संन्यासी का परमतप है।।८।।

क्योंकि जैसे अग्नि में तपने और गलाने से धातुओं के मल नष्ट हो जाते हैं, वैसे ही प्राणों के निग्रह से मन आदि इन्द्रियों के दोष, भस्मभू होते हैं।।९।।

इसलिए संन्यासी लोग नित्यप्रति प्राणायामों से आत्मा अन्तःकरण और इन्द्रियों के रोष, धारणाओं से पाप, प्रत्याहार से संगदोष, ध्यान से अनीश्वर के गुणों अर्थात् हर्ष शोक और अविद्यादि जीव के दोषों को भस्मीभूत करें।।१०।।

इसी ध्यानयोग से जो अयोगी अविद्वानों के दुःख से जानने योग्य छोटे बड़े पदार्थों में परमात्मा की व्याप्ति उसको और अपने आत्मा और अन्तर्यामी परमेश्वर की गति को देखे।।११।।

सब भूतों से निर्वैर, इन्द्रियों के दुष्ट विषयों का त्याग, वेदोक्त कर्म और अत्युग्र तपश्चरण से संसार में मोक्षपद को पूर्वोक्त संन्यासी ही सिद्ध कर और करा सकते हैं, अन्य नहीं।।१२।।

जब संन्यासी सब भावों में अर्थात् पदार्थों में निःस्पृह कांक्षारहित और सब बाहर भीतर के व्यवहारों में भाव से पवित्र होता है, तभी इस देह में और मरण पाके निरन्तर सुख को प्राप्त होता है।।१३।।

इसिलये ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यासियों को योग्य है कि प्रयत्न से दश लक्षणयुक्त निम्नलिखित धर्म का सेवन नित्य करें।।१४।।

पहला लक्षण-(धृति) सदा धैर्य रखना। दूसरा- (क्षमा) जो कि निन्दा स्तुति मानापमान हानिलाभ आदि दुःखों में भी सहनशील रहना। तीसरा-(दम) मन को सदा धर्म में प्रवृत्त कर अधर्म से रोक देना अर्थात् अधर्म करने की इच्छा भी न उठे। चौथा- (अस्तेय) चोरी त्याग अर्थात् बिना आज्ञा वा छल कपट विश्वासघात वा किसी व्यवहार तथा वेदविरूद्ध उपदेश से पर पदार्थ का ग्रहण करना चोरी और उस को छोड़ देना साहुकारी कहाती है। पांचवां -(शौच) राग-द्वेष पक्षपात छोड़ के भीतर और जल मृत्तिका मार्जन आदि से बाहर की पवित्रता रखनी। छठा-(इन्द्रियनिग्रह) अधर्माचरणों से रोक के इन्द्रियों को धर्म में ही सदा चालाना। सातवां- (धीः) मादकद्रव्य बुद्धिनाशक अन्य पदार्थ दुष्टों का संग आलस्य प्रमाण आदि को छोड़ के श्रेष्ठ पदार्थों का सेवन सत्पुरूषों का संग योगाभ्यास धर्माचरण ब्रह्मचर्य आदि शुभकर्मों से बुद्धि बढ़ाना। आठवां- (विद्या) पृथिवी से लेके परमेश्वर पर्यन्त यथार्थज्ञान और उन से यथायोग्य उपकार लेना, सत्य जैसा आत्मा में वैसा मन में, जैसा मन में वैसा वाणी में, जैसा वणी में वैसा कर्म में वर्त्तना विद्या, इससे विपरीत अविद्या है। नववां- (सत्य) जो पदार्थ जैसा हो उसको वैसा ही समझना वैसा ही बोलना और वैसा ही करना भी। दशवां (अक्रोध) क्रोधादि दोषों को छोड़ के शान्त्यादि गुणों का ग्रहण करना धर्म का लक्षण है। इस दश लक्षणयुक्त पक्षपातरहित न्यायाचरण धर्म का सेवन चारों आश्रम वाले करें और इसी वेदोक्त धर्म ही में आप चलना और दूसरों को समझा कर चलाना संन्यासियों का विशेष धर्म है।।१५।।

इसी प्रकार से धीरे-धीरे सब संगदोषो को छोड़ हर्ष शोकादि सब द्वन्द्वों से विमुक्त होकर संन्यासी ब्रह्म ही में अवस्थित होता है। संन्यासियों का मुख्य कर्म यही है कि सब गृहस्थादि आश्रमों को सब प्रकार से व्यवहारों का सत्य निश्चय करा अधर्म व्यवहारों से छुड़ा सब संशयों का छेदन कर सत्य धर्मयुक्त व्यवहारों में प्रवृत्त कराय करें।।१६।।

प्रश्न- सन्यास ग्रहण करना ब्राह्मण ही का धर्म है वा क्षत्रियादि का भी?

उत्तर- ब्राह्मण ही को अधिकार है, क्योंकि जो सब वर्णों में पूर्ण विद्वान् धार्मिक परोपकारप्रिय मनुष्य है उसी का ब्राह्मण नाम है। बिना पूर्ण विद्या के धर्म परमेश्वर की निष्ठा और वैराग्य के संन्यास ग्रहण करने में संसार का विशेष उपकार नहीं हो सकता। इसीलिए लोकश्रुति है कि ब्राह्मण को संन्यास का अधिकार है, अन्य को नहीं यह मनु का प्रमाण भी है-

एष वोऽभिहितो धर्मो ब्राह्मणस्य चतुर्विधः। पुण्योऽक्षयफलः प्रेत्य राजधर्मं निबोधत।। मनु०।।

यह मनु जी महारजा कहते हैं कि हे ऋषियों! यह चार प्रकार अर्थात् ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यासाश्रम करना ब्राह्मण का धर्म है। यहां वर्तमान में पुण्यस्वरूप और शरीर छोड़े पश्चात् मुक्तिरूप अक्षय आनन्द का देने वाला संन्यास धर्म है। इस के आगे राजाओं का धर्म मुझ से सुनो। इस से यह सिद्ध हुआ कि संन्यासाग्रहण का अधिकार मुख्य करके ब्राह्मण का है और क्षत्रियादि का ब्रह्मचर्याश्रम है।

क्रमशः

धरोहर.... आर्य जगत् के जाज्वल्यमान नक्षत्र–

महाशय धर्म पाल जी आर्य

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा
उ०प्र०, लखनऊ
संचालक–गुरूकुल पूठ, हापुड़
मो० ६८३७४०२१६२

महाशय धर्मपाल आर्य का नाम आज पूरे विश्व में आबाल वृद्ध के लिए सुपरिचित है। मसालों के बादशाह, तांगे वाला, लाल पगड़ी वाले, सफेद मूछें वाले, नीचे चुश्त पायजामा ऊपर अचकन, गले में सुन्दर मोतियों की माला, हाथ में सुन्दर बेंत देखते ही सब उस भव्य रूप को पहचान लेते हैं।

आर्य जगत् के जाज्वल्यमान नक्षत्र की विशेष रूप से चर्चा दानवीर, शूरवीर, भामाशाह के रूप में सर्वत्र सुनी जा रही है आपने आर्य समाज के कार्य को बढ़ाने के लिए गुरूवर देव दयानन्द जी के मानस परिवार की अभिवृद्धि के लिए आपकी उदात्त एवं आत्मीय विचारधारा संकल्प से जुड़कर गुणात्मक लाभ कर रही है तथा समाज में एक नीवन ऊर्जा प्रदान कर रही है। आर्य केन्द्रीय सभा के अध्यक्ष के रूप में लम्बे समय तक आर्य सामज की सेवा की है गुरूकुल कांगड़ी के लिए अस्पताल, वि०वि० हरिद्वार तथा रोगियों के लिए अस्पताल, बच्चों के लिए स्कूल, आर्य संस्थाओं के परिषोक्ता के रूप में आपको सम्मान प्राप्त हुआ है। और भविष्य में भी इसी प्रकार कार्य बढ़ता रहेगा।

आपका जन्म वर्तमान पाकिस्तान के पंजाब प्रान्त लायलपुर नगर अन्तर्गत ग्राम में हुआ था आपके पूज्य पिताजी चुन्नीलाल जी एवं माता श्रीमती चन्नन देवी जी के घर पर हुआ "होनहार वाली कहावत आपने सार्थक की होनहार अर्थात जिसकी कमी भी कहीं भी हार न हो वह होनहार कहलाता है अपः आप प्रारम्भ से ही विजयी होते रहे, पढ़ने में, लिखने में, खेलने में, सदैव अपने साथियों को पराजित करके स्वयं विजयी होते रहे अपने माता–पिता और गुरूजनों की प्रसन्नता को बढ़ाते रहे उनसे आशीर्वाद प्राप्त करके सदैव सफलता की सीढ़ी पर चढ़ते रहे। सफल–फल सहित परिणाम आपका उत्साहवर्धक रहता था यही उत्साह सदैव आपको ऊँचाईयों की ओर प्रेरित करता रहा जो आज ये हिमालय की सबसे ऊँची चोटी एवरेस्ट पर खड़े हुए सभी को अपना आशीर्वाद दे रहे हैं।

मेरा सर्वप्रथम परिचय आर्य समाज दीवान हाल दिल्ली में १९८८ में हुआ था आर्य समाज की शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल जी शाल *वाले समाज कार्यालय* में पं० यशपाल जी सुधांशु एवं लक्ष्मीचन्द्र चौधरी के साथ बैठे थे संयोग से मैं पहुंचा तो परिचय हुआ तभी श्री सच्चिदानन्द शास्त्री जी भी आ गए वार्तालाप और कुशलता के पश्चात् गुरूकुल ततारपुर की यज्ञशाला का शिलान्यास कार्यक्रम करना था उसके लिए प्रधान जी से प्रार्थना की डायरी देखकर बोले मेरे जाने की व्यवस्था कैसे होगी तब मैंने कहा कि आप गाड़ी करके आ जावें तब वे थोड़े से हंसते हुए बोले अरे। हम यदि कुछ दे नहीं सकते तो हमें ऐसी संस्थाओं से लेने का भी अधिकार नहीं बनता। अभी ठहरो कुछ व्यवस्था करते हैं उन्होंने तभी महाशय जी को फोन मिलाया वार्ता हुई तभी उन्हें कहा कि इधर आ जाओ महाशय जी आये और समय निश्चित हो गया ४/२/१९८२ को प्रातः ठीक ८ बजे अपनी गाड़ी से आ जायेगें प्रथम दर्शन से ही प्रभावित हो गया था और नियत समय पर प्रधान जी को लेकर आप गुरूकुल आ गए थे यज्ञ हुआ तत्पश्चात महाशय जी के भजन हुए भजनोपरांत स्वागत और प्रधान जी का भाषण फिर हुआ शिलान्यास कार्यक्रम पुनः भोजन किया इसी क्रम में आपकी आत्मीयता से सभी कुलवासी अपने को सौभाग्यशाली अनुभव कर रहे थे। उसके बाद तो समय–समय पर कार्यक्रमों में आपके दर्शन होते रहे गुरूकुल पूठ की स्थापना १९६० में हुई १९६२ में छात्रावास के प्रथम कक्ष का उद्घाटन आपके ही कर कमलों द्वारा हुआ था आपका भाषण प्रभावशाली था यज्ञ में भी आपने आहुतियों लगाई थी तभी से पुनः आने की प्रतीक्षा कर रहा हूं मना भी नहीं करते और समयाभाव है आते भी नहीं आपके कार्यालय पर कई बार जाने का अवसर मिला है आपने गुरूकुल के १० छात्रों के लिए आंशिक छात्रवृत्ति ३००/– मासिक स्वीकृत की है पिछले ३–४ वर्षों से संस्था में आपका आशीर्वाद मिल रहा है। आपकी उदारता का परिचय आपके ६० वें जन्मदिन पर देखने को मिला आपने पूरे देश में जो संस्थायें खड़ी की है। और उनका संचालन कर रहे हैं यह सरकार के बाद ऐसा सौभाग्य आपको ही प्राप्त है गल जन्मों के पुण्यों का सुफल है गरीब छात्र ब्रह्मचारी, पढ़ाई के लिए गरीब कन्या, विवाह के लिए, रोगी के लिए चिकित्सा, यज्ञ के लिए सामग्री घी तथा पढ़ने के लिए सुलभ साहित्य जो भी याचक भिक्षु, सन्यासी, विद्वान, उपदेशक ब्र० जैसे महाराज रघु और महाराजा भोज महाराजा दानवीर कर्ण के यहां से कोई खाली हाथ नहीं जाता था उसी प्रकार कोई अभ्यर्थी आपके दरबार से खाली नहीं आता यह परम उदारता का ही परिचायक है। शतहस्त समाहर सहस्र हस्त संकिर वेद के इस मन्त्रांश को सार्थक किया है। कि "सौहाथों से कमाओं और हजार हाथों से दान करो।" गुरूकुल पौधा देहरादून में पानी की टंकी बनवाना, गुरूकुल चोटीपुरा में छात्रा आवास बनवाना, गुरूकुल कांगड़ी में फार्मेसीं विभाग का जीर्णोद्धार एवं नवीनीकरण कराना, हरिद्वार पतजंली आश्रम में अतिथि भवन करोड़ो रूपयों से तैयार हुआ करनाल गुरूकुल में २५ लाख रूपये इसी प्रकार अजमेर परोपकारी सभा में गौशाला निर्माण हेतु भी २५ लाख रूपये दक्षिणभारत में वेदगुरू कुलम् हेतु करोड़ो रूपये का दान सिद्ध करता है कि आपने दो हाथों से कमाकर हजारों हाथों से दान किया है। यह तो स्थाई सम्पत्ति के रूप में देखा जा सकता है लेकिन जैसे सम्मेलन समारोह होते हैं उसमें आपको मुख्य अतिथि के रूप में आमन्त्रित किया तो वहां पर लाखों की संख्या में किया हुआ दान आयोजकों में वेद प्रचार एवं सम्मेलन के लिए उत्साह पैदा करता है आपका भी स्पष्ट कहना कि अर्थ के अभाव में कोई कार्य रूकना नहीं चाहिए आप समय लगाकर पुरूषार्थ पूर्वक महर्षि दयानन्द के विचार लोगों तक पहुंचाते हैं हमारा भी घर बैठे सहयोग हो जाता है यह तो प्रभु की कृपा है कि मुझे प्रभु ने यह प्रेरणा पैदा की है अतः आप सदैव उत्साह पूर्वक वेद प्रचार में लगे रहो यह आपका मूलमंत्र हे सफलता की सीढ़ी पर चढ़ने के लिए अपने निजी जीवन के पुरूषार्थ और अनुभव से भी प्रेरणा प्रदान करते रहते हैं जैसे आपक वह समय था जब भारत वर्ष का विभागजन हुआ था और लोग अपने तथा अपनों के जवीन की रक्षा और सुरक्षा को ध्यान में रखकर मकान, दुकान और जमीन जायदाद सब कुछ वहीं छोड़कर आये थे और पअने जीवन निर्वाह के लिए सुविधानुसार लोगों ने कार्य किया था उसी क्रम में आपने दिल्ली रेलवे स्टेशन पर घोड़ा तांगा चलाकर लोगों की सेवा करके जो कुछ मिल जाता था उससे स्वयं एवं परिवार का पालन–पोषणतम समय बिताया उधर घर पर पूज्य पिता जी अपने हाथों से मसाला कूटकर तैयार करते थे फिर सायंकाल अवसर पाकर उसे बचेते थे धीरे–धीरे वहीं कार्य स्थाईभाव को प्राप्त हो गया और प्रगति करता गया लोगों का विश्वास जीतने के लिए कितना परिश्रम करना पड़ता है यह आपके जीवन का साक्षात् अनुभव है सेवाकार्य कितना कठिन है यह महाराजा भर्तृहरि लिखते है कि "सेवाधर्मः रम गहनो योगिनाम प्यगम्यः" योगी जन भी इस रहस्य का पार नहीं पा सके हैं अतः आपने इसकाल में जो भी तप किया है वह भूख–प्यास, गर्मी–सर्दी, मान–अपमान, सुख–दुःख, लाभ–हानि, यश अपयश, सभी द्वन्दों को सहन करके उसे जीतकर आप विजयी बने और सनत के महात्मा बने–महाशय जी बनें। जो इतिहास आज भी हम सभी आबाल वृद्ध को प्रेरणा प्रदान कर रहा है। दान–तप और ईश्वरभक्ति आपके जीवन के आधार रहे हैं ईश्वरभक्ति में पांच यज्ञों को अपनी दिनचर्या में अपनाया है दोनों समय घर–पर एवं फैक्ट्री में यज्ञ एवं सत्संग करना आपके लिए वरदान बन गया है। आपका दृढ़विश्वास है कि मेरे जीवन की उन्नति का रहस्य यज्ञ रूपी दैवी नौका है जो इस जीवन की नौय्या को दुःखों के सागर से पार करा देती है श्रद्धा और विश्वास को आपने साथ जोड़कर उसमें चमत्कार पैदा किया है जो बिन्दु से विकास सागर की तरह विस्तार करता हुआ आज पूरे विश्व में आपके नाम का यश चन्द्रमा की तरह स्वच्छ–पवित्र, शीतल

शेष पृष्ठ ७ पर

गॉड पार्टिकल और त्रैतवाद

–महेन्द्र आर्य

४ जुलाई २०१२ की शाम को देश के सारे टेलीविजन बहुत अजीबोगरीब समाचार सुना रहे थे, जिनकी हेडलाइन थी 'ईश्वर' की खोज, ईधर का रहस्य खुला, भगवान् का पता चला आदि। लोक विस्मय से टेलीविजन के सामने बैठ गए। लेकिन इन सभी चैनलों ने जो बताया और दिखाया, उसका सार शायद खुद समाचार वाचक भी नहीं समझ पा रहे थे। और बहुत ही उलझी हुई भाषा में किसी हिग्स बोसोन पार्टिकल की चर्चा कर रहे थे। मैं नहीं समझता कि किसी भी आम आदमी को इस चर्चा में कुछ विशेष समझ में आया। ये सारी चर्चा विज्ञान के नए अविष्कार पर ही थी, जिसमें ईश्वर का नाम जुड़ा होने के कारण हर भारतीय इसे समझने की कोशिश में था। इस लेख में मैं इस विषय को आम आदमी की समझ के अनुसार लिखने का प्रयास कर रहा हूँ।

मैं विद्यालय और कॉलेज में विज्ञान का विद्यार्थी था, इसलिए उन दिनों का पढ़ा हुआ भौतिक विज्ञान याद करता हूँ। विज्ञान में पढ़ाया गया था कि परमाणु पदार्थ का सूक्ष्मतम कण है, जिसे समान्य रूप से देख पाना सम्भव नहीं है। विज्ञान ने इसके आगे बताया कि एक परमाणु भी बहुत सारे कणों से बनता है, जिन्हें आणविक कण (Atomic Particles) कहते हैं। इन कणों में जो ज्ञात मुख्य कण थे उनके नाम हैं–प्रोटान, इलेक्ट्रान और न्यूट्रोन। इन कणों को नापना भी बहुत मुश्किल है, क्योंकि साधारण नाम–तौल के यन्त्रों की सीमा में ये नहीं आते। तुजनात्मक रूप में प्रोटोन सबसे भारी और और ऋणात्मक विद्युत युक्त, एवं न्यूट्रोन एक प्रोटोन और इलेक्ट्रोन के योग के बराबर वजन और बिना किसी विद्युत का कण है। प्रोटोन और न्यट्रोन परमाणु के केन्द्र में स्थापित हैं। और इलेक्ट्रोन इस केन्द्र क चारों तरफ चक्कर काटता है। इस पूरे निर्माण को स्थायित्व देने के लिए कुछ अस्थययी और अत्यधिक ऊर्जा से पूर्ण कण हैं, जिन्हें कहते हैं–काव्क्र्स। ये काव्क्र्स किसी भी प्रकार देखे नहीं जा सकते, क्योंकि वो बहुत सूक्षम होते हैं और बहुत अधिक गति से दूसरे कणों से जुड़ते रहते हैं। काव्क्र्स के अन्दर क्या–क्या आते हैं, यही बहुत लम्बे काल से वैज्ञानिकों के शोध का विषय रहा है।

१९२०–३० के दशक में भारत के एक वैज्ञानिक श्री सत्येन्द्र बोस ने परमाणु की रचना पर एक परिकल्पना की। वैज्ञानिक प्रमाणों के आधार पर अपनी अवधारणा पर टिप्पणी के लिए उन्होंने अपने लेख को विश्व के महानतम वैज्ञानिक श्री अलबर्ट आइन्स्टीन के पास जर्मनी भेज दिया। आइन्स्टीन उनके विचारों से बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने बोस के लेख को जर्मन भाषा में अनुवादित करते विश्व की अत्यधिक प्रामाणिक एक जर्मन वैज्ञानिक पत्रिका जगत में 'बोस आइन्स्टीन कंडेनसेट अवधारण' के नाम से जाना जाता है। अपनी अवधारणा में बोस ने जिस कण के होने की चर्चा की उस कण को नाम दिया गया 'बोसोन'।

जुलाई, २०१२ के पहले सप्ताह में स्विट्जरलैण्ड के जिनेवा शहर में वैज्ञानिकों ने एक सफल प्रयोग की घोषणा की। उनका प्रयोग था एक बहुत बड़ी मशीन में परमाणु का विघटन करके उसकी रचना पर शोध करना। उन्होंने दावा किया कि उनके प्रयोग में सत्येन्द्र बोस की परिकल्पना के आधार पर माना गया परमाणु अंश 'बोसोन', जो कि समय के साथ–साथ एक और अंग्रेज वैज्ञानिक पीटर हिंग्स के नाम के साथ जुड़ गया, और बन गया–'हिग्स बोसोन' प्राप्त कर कर लिया गया है। अपनी बातको सत्यापित करने के लिए CERN, जिनेवा की प्रयोशाला में बनया गया हाइड्रो एक विशाल हाइड्रो–कोलाईडर, जिस पर कुल खर्च आया १००० करोड़ डॉलर।

आखिर इसमें ईश्वर का नाम कैसे आ गया? इस बात का कारण मिलता है हमें उस प्रश्न से, जिसमें वैज्ञानिक अपने आप से पूछ रहे थे कि इतने सूक्षम कणों के सम्मेलन से इतने विशाल ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति कैसे संभव हुई? बिना प्रचुर मात्रा में पदार्थ हुए इस तरह की रचनाएं कहां से आई? पीटर हिंग्स की परिकल्पना के अनुसार बोसोन जैसे कण ब्रह्माण्ड में हैं और उनके अन्दर एक चिपकने वाला वातावरण बनाने की क्षमता है, जिससे वो अन्य कणों से जुड़ते चले जाते हैं, और शून्य से निर्माण हो जाता है बड़ी–बड़ी रचनाओं का जिनेवा में ये तथ्य सिद्ध हुआ है। विज्ञान की दृष्टि में ये प्रयोग बहुत महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि इसकी सत्यता से उनकी ब्रह्माण्ड की रचना से सम्बंधित सारी परिकल्पनाएं सत्य हो जाती है।

ये तो था वैज्ञानिक तथ्य इस ईश्वरीय कण (God Particle) नामक काल्पिनिक कण की खोज का। आईये अब इस बात के आध्यात्मिक और दार्शनिक पक्ष की भी चर्चा करें। सबसे पहली बात कि हिंग्स बोसोन कण का नाम गॉड–पार्टिकल क्यों पड़ा? लियोन लीडरमैन नामक एक लेखक ने एक पुस्तक लिखी, जिसका विषय 'ज्ञान के दृष्टिकोण से ब्रह्माण्ड की रचना पर खोज' था। उन्होंने सोचा कि इस परिकल्पित कण को यदि गॉड–पार्टिकल नाम दे दिया जाए तो बहुत बड़ी सनसनी फैलेगी, इसलिए उन्होंने अपनी पुस्तक का नाम रख दिया 'गॉड पार्टिकल'।

अब अगर सारी वैज्ञानिक अवधारणायें सच मान ली जाएं, तो सिद्ध हुआ? ये कहना तो मूर्खतापूर्ण बात है कि इस तरह का कण ही ईश्वर है। ये बात सिर्फ वही कह सकते हैं जिन्हें ईश्वर की सत्ता का सतही ज्ञान भी नहीं है। सिद्ध यही होता है कि सारे ब्रह्माण्ड जिसमें आते हैं, बड़े–बड़े ग्रह, उपग्रह, पृथ्वी, चन्द्रमा, नक्षत्र और उन पर बने हुए भूखण्ड, पर्वत, समुद्र, नदियां और समस्त प्रकृति, उसके निर्माण का मूल कारण हिंग्स बोसोन कण हो सकता है और इसे मानने में कोई हर्ज नहीं है।

त्रैतावाद के सिद्धान्त के अनुसार ईश्वर जीव और प्रकृति तीनों की अलग–अलग सत्ता है। तीनों अपने आप में सम्पूर्ण हैं। जैसे जीव कभी समाप्त नहीं होता सिर्फ अपना रूप बदलता रहता है, उसी तरह प्रकृति भी कभी समाप्त नहीं होती, उसका भी रूपान्तरण होता रहता है। जैसे सागर के जल से वाष्प, वाष्प से बादल और बादल से फिर जल की रचना होती है, उसी तरह सम्भवतः अति सूक्ष्म कणों के संयोजन से विशाल ग्रहों का निर्माण संभव है। विज्ञान के Law of Conservation of Matter (पदार्थ के कभी समाप्त न होने का नियम) के अनुसार भी ये बात सही बैठती है। प्रलय के समय सम्भतः ये ग्रह–उपग्रह आदि पुनः उसी तरह के सूक्ष्म कणों में बंटकर विलीन हो जाते होंगे, जो वास्तव में विलीन न होकर सूक्ष्मतम कणों के रूप में विद्यमान रहते हैं, जैसा कि जिनेवा के प्रयोग में वैज्ञानिकों ने परमाणु को ऐसे कणों में विभक्त कर के बताया।

जैसे जीव का आवागमन उसके कर्मों के आधार पर चलता रहता है, वैसे ही प्रकृति का परिवर्तन भी उसके अन्दर होने वाली निरन्तर क्रियाओं से चलता रहता है। बड़े– बड़े पर्वतों के खण्ड जल के बहाव में छोटी–छोटी रेत के रूप में परिवर्तित हो जाते हैं। बर्फीले पहाड़ पिघल कर सागर बन जाते हैं। पृथ्वी के अन्दर की अग्नि कभी लावा बनकर ज्वालामुखी के रूप में फूट पड़ती है, उसी तहर हिग्स बोसोन कणों का भूखण्ड बनना भी सम्भव है। मेरे विचार में हिग्स बोसोन त्रैतवाद के सिद्धान्त को ही मजबूत बनाता है।

प्रेरक प्रसंग–

साधुवेश में धोखा

एक राजा को कोढ़ का रोग लग गया था। वैद्य ने निदान किया और कहा कि यदि मानसरोवर के हंस पकड़कर लाये जायें और उनके कलेजे से दवाई बनाकर दी जाये तो राजा का कोढ़ ठीक हो सकता है।

राजा को किस बात की कमी। उसने मन्त्रियों को आदेश दिया कि व्याध भेजकर मानसरोवर से हंस पकड़कर लाये जायें। आदेश पाते ही व्याधों ने मानसरोवर के लिए प्रस्थान किया।

व्याध वहां पहुंचे कि उनको देख कर हंसों ने मानसरोवर से प्रस्थान कर दिया। यह देखकर व्याध एक बार तो निराश हो गये, किन्तु थे तो वे व्याध ही। उन्होंने अपना वेश बदल लिया। उन्होंने साधु संन्यासी का वेश धारण कर जटाएँ धारण की और कमण्डलु हाथ में लेकर सरोवर पर विचरण करते रहे।

साधुओं को देकखर हंस डरे नहीं। वे वहीं विचरण करते रहे। व्याधों को अवसर मिल गया और वे हंसों को पकड़कर राजा के पास ले आये।

अब राज ने जब हंसों के पकड़े जाने की कथा सुनी तो उसको अच्छा नहीं लगा, उसने उन हंसों को मुक्त करवा दिया।

अपनी चिकित्सा के लिए राजा ने किसी अन्य वैद्य को बुलवाया और उसकी चिकित्सा से वह स्वस्थ हो गया। उधर उन व्याधों ने भी प्रायश्चित स्वरूप पक्षीवध का नृशंस कार्य त्याग दिया।

पीपल पत्ते सा जीवन

–प्रताप कुमार 'साधक'

अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता।
गोभाज इत्किलासथ यत्सनवथ पूरूषम्।।

(युज० १२, ७६, ३५–४)

शब्दार्थ– अश्वत्थे जो कल नहीं रहेगा, उसमें वः निषदनं–तुम्हारी स्थिति है। पर्णे– पत्ते (के समान अस्थिर जीवन) में वः वसतिः कृता– तुम्हारा निवास किया गया है। यत् पुरूषम् सनवथ–यदि ईश्वर को अपना उपास्य, अपना साथी बना लो, तो गोभाजः– वेदज्ञान–युक्त तथा इन्द्रियों का उचित रीति से सेवन *करने वाले किल असथ –निश्चय ही हो जाओ।*

व्याख्या– श्वः का अर्थ है आने वाले कल और अश्वत्थ का अर्थ है–जो कल नही रहेगा अर्थात् अनित्य, नाशवान, क्षणभंगुर। पीपल को भी अश्वत्थ कहते है। पीपल का पत्ता इतना हल्का होता है कि थोड़े से पवन से ही अस्थिर हो जाती है। विचार कीजिए–मनुष्य के जीवन का अस्तित्व क्या उस बूंद से अधिक है? सुन्दर मानव, शरीर बलिष्ठ भुजाएं, ज्ञानार्जित मस्तिक, धन, बल, यौवन, मुक्त, मान, प्रतिष्ठा पदवी के गर्व से उन्नत शिरोभाग क्या प्राण के निकलते ही क्षणमात्र में भू–स्खलित नहीं हो जाता? बड़े प्रयत्न से, उचित अनुचित का विचार किए बिना जो सम्पत्ति भावी जीवन, काल में सुख–भोग हेतु संचित करते हैं, यश पाश छूट नहीं जाती? जिन पारिवारिक जनों के लिए हम ईशाज्ञा के विरूद्ध जाकर भी सुख–सामग्रियां एकत्र करते है? वे क्या टूटे श्वासों के तार को कुछ काल के लिए ही सही जोड़े रख सकते है?

निश्चय ही हम पूर्णतः असहाय हैं, हमारे सांसरिक सम्बन्धी और मित्रजन भी हमारी कुछ भी सहायता नहीं कर सकते। जब हम रात्रि में शयन करके विस्तर पर जाते हैं तो निश्चित रूप से यह नहीं कह सकते कि प्रातःकाल देख सकेंगे। बारम्बार बाहर निकल रहा हमारा कौन सा प्रश्वास अन्तिम होगा। यह नहीं जानते। अतः वेद के उपरोक्त मंत्र में बड़ा ही सटीक उदाहरण देकर स्पष्ट किया गया है कि हमारा जीवन पीपल के पत्ते पर पड़ी हुई पानी की बूंद के समान अस्थायी है। अतः इस अनित्य जीवन को नित्य मानना सबसे बड़ी अविद्या है। 'अनित्याशुचिदुः खानात्मसु नित्यशुचि सुखात्मरख्यातिरविद्या।'

अर्थात्– अनित्य को नित्य, अपवित्र को पवित्र, दुःख को सुख, और अनात्म (जड़) को चेतन जानना, मानना ही अविद्या है। पंचक्लेशों में अविद्या प्रधान क्लेश माना गया है, जो शेष चारों क्लेशों का आधार है। अतः नित्य और अनित्य में भेद समझने के लिए वेद वाणी और चिन्तन, मनन से हम अविद्या, अज्ञान से मुक्ति पा सकते हैं।

जीवन अनित्य है, संसार अनित्य है, तो नित्य–शाश्वत क्या है? इस प्रश्न का समाधान कठ उपनिषद् में प्राप्त होता है–

''न जायते म्रियते वा विपश्चिन्नायं कुतश्चिन्न बभूव कश्चित्।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणों न हन्यते हन्माने शरीरे।।२–१८)

अर्थात्– यह आत्मा न उत्पन्न होता है, न मरता है। यही अजन्मा, शाश्वत, नित्य, सनातन है जो शरीर के नाश होने पर भी नष्ट नहीं होता। इस नित्य परम चेतन परमात्मा ही हो सकता है, जो कभी भी किसी भी दशा में साथ नहीं छोड़ता। उस दुःखों से सर्वथा रहित आनन्द स्वरूप ईश्वर को अपना उपास्य, लक्ष्य, रक्षक, और सहायक बनाने के लिए प्रथमतः वेदवाणी–ईश्वराज्ञा को जानना और सझना है, और उन्हें अपने आचरण में उतारना है। 'गो' का अर्थ वेद भी है और इन्द्रिय भी। वेद ईश्वरीय ज्ञान होने से पूर्ण सत्य हैं, यही मनुष्य के लिए करने योग्य कर्मों का आधार हैं। इन्द्रियों से तात्पर्य है–जीवात्मा को प्रदत्त समस्त साधन, शरीर, बाह्यकरण एवं अन्तःकरण, जिनके द्वारा आत्मा प्राप्त ज्ञान को आचरण में उतारता है। उपरोक्त मंत्र में स्पष्ट कर दिया गया है कि जो मनुष्य इस अनित्य संसार में नित्य परमेश्वर को ी अपना उपास्य बनाकर वेदानुकूल शुकर्मों में प्रवृत्त रहते हैं, उन्हें परम दयालु परमात्मा अपना लेता है। और तब संसार या मनुष्य जीवन की अनित्यता, क्षणभंगुरता दोनों के मिलन में कोई बाधा नहीं बन सकती। किन्तु ईश्वर की ऐसी कृपा प्राप्त करने के लिए केवल ज्ञान प्राप्त कर लेना पर्याप्त नहीं है। कठोपनिषद् (२–२३) में स्पष्ट कर दिया गया है।''नायत्मा प्रवचनेन लम्यो न मेघया न बहुना श्रुतेन। यमेवैष वृणुते तेन लभ्यस्तस्यैष आत्मा विवृणुते तनू अस्वाम्।।''

अर्थात– यह परमात्मा बहुत पढ़ लेने से, उपदेश सुनने से या बुद्धिमान से जाने मात्र से प्राप्त नहीं होता। यह तो उसी को प्राप्त होता है, जिसे प्रभु, स्वयं सुपात्र समझकर चुन लेता है।

अतः इस अनित्य जीवन को सार्थक बनाने के लिए वृद्धावस्था की प्रतीक्षा न करके प्रत्येक मनुष्य को तुरन्त सावधान और सक्रिय हो जाना चाहिए, तभी पीपल के पत्ते पर रहने के भय (अनिनिवेश) से बचा जा सकता है। –मो० : ६४५०००१४४१

अप्प दीपो भव अर्थात् स्वयं जलकर दूसरों तक प्रकाश पहुंचाओ

सीताराम गुप्ता, दिल्ली

कहा जाता है अप्प दीपो भव। अपना प्रकाश स्वयं बनो। अत्यंत प्रेरक संबोधन है यह। ठीक है। आप में ऊर्जा है, उत्साह है। कौन रोक सकता है आपको अपना प्रकाश बनने से, अपना स्वयं का विकास करने से? करना भी चाहिए। जो अपनी मदद खुद करते हैं, दूसरे भी उन्हीं की मदद करते हैं। लेकिन एक बात है। एक खूबसूरत दीपक है स्नेह (तेल) से लबालब भरा हुआ। उसमें एक अत्यंत पुष्ट वर्तिका भी लगी है।

लेकिन इतना सब होते हुए भी दूसरों को प्रकाशित करना तो दूर वह स्वयं भी प्रकाशित नहीं है। वह तब न तो दूसरों को प्रकाश दे सकता है और न स्वयं ही प्रकाशित हो सकता है जब तक कि अन्य कोई दीपक उसे प्रज्वलित नहीं करता, उसे अपना प्रकाश नहीं दे देता। अर्थात् हमें अपना प्रकाश स्वयं के अनुभवों से जीवन में सीखते ही कितना हैं? जिन्हें हम अपने अनुभव कहते हैं वो वास्तव में हमारे संपूर्ण परिवेश के समग्र अनुभवन ही तो होते हैं।

दीपक चाहे स्वयं अपना प्रकाश बन जाए लेकिन एक दीपक भी स्वयं नहीं बनता। उसको भी एक कुम्हार बड़े यत्न से निर्मित करता है। मिट्टी को कूटता–पीटता है, बारीक करके छानता है, उसे भिगोता है। फिर उसे आकार देता है। आकार देने के बाद उसे चाक से उतारने में भी उसका कम कौशल नहीं होता? अत्यंत मृदुता से उसे चाक से उतारता है। यदि यहां पर ज़रा सी चूक हो जाए तो आकार ही बिगड़ जाए बेचारे दीपक का। फिर सूखने के लिए रखता है। सुखाने के बाद रंगता भी है उसे और अंत में पकाता है। तब कहीं जाकर तैयार होता है एक लघु आकार का पात्र जिसे दीपक बनना होता है।

पात्र दीपक नहीं होता। पात्र को दीपक बनने के लिए की आवश्यकता होती है। स्नेह यानी ऊर्जा। तैल अथवा घृत। किसान दिन–रात खेल में मेहनत करके तिलहन का उत्पादन करता है। फिर उसमें से तेल निकाला जाता है। कोल्हू के बैल की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है तेल निकालने के लिए। वैसे किसान का पूरा परिवार ही कोल्हू के बैल की तरह लगा रहता है तब कहीं जाकर पात्र को स्नेह अथवा तेल से पूरित कर दीपक बनाना संभव हो पाता है।

स्नेह के उपरांत वर्तिका भी जरूरी है। वर्तिका के लिए रूई की जरूरत पड़ती है। वह भी किसान कर्म से ही प्राप्त होती है। किसान बीज बोता है। पौधों की देखभाल करता है, उनमें पानी देता है। पौधों पर फूल खिलते हैं। यही कपास है। वह कपास चुनता है। कपास को ओंटा जाता है अर्थात् उसमें से बीज अलग किये जाते हैं। बीज अर्थात् बिनौले अलग होने के बाद जो रेशा बचता है वही रूई है। रूई को धुना जाता है। उसके रेशे हमवार किए जाते हैं। इसी कोमल रूई से बनती है वर्तिका या बाती। पात्र में वर्तिका लगाकर इसे स्नेह से भर दिया जाता है, इसे दीपक बनाने के लिए। लेकिन फिर भी यह प्रकाश का स्रोत नहीं बन पाता। न खुद ही प्रकाशित होता है और न दूसरों को ही प्रकाशित कर पाता है। यह तो दूसरा कोई प्रज्वलित दीपक ही है जो अपनी लौ से इसे भी प्रज्वलित कर जाता है।

अप्प दीपो भव। अपना प्रकाश स्वयं बनो। लेकिन प्रकाश से पूर्व एक स्थूल दीपक बनना भी जरूरी है। स्थूल दीपक भी बन गए तो कोई न कोई प्रज्वलित दीपक हमसे आ मिलेगा और हमें भी प्रकाशित करके ही जाएगा। और हम तो ऐसे दीपक हैं जो प्रकाश लेने के लिए दूसरे दीपक के पास जाने में भी परहेज करते हैं। संकोच के कारण या अहंकार के वशीभूत होकर। हमारे संकोच, हमारी विवशता व अन्य सीमाओं को देखकर दूसरे कई दीपक स्वयं हमारे पास आ पहुंचते हैं हमें प्रकाशित करने ताकि हम स्वयं भी प्रकाशित हो सकें और दूसरों को भी प्रकाश दे सकें। और इसका आभास भी नहीं होने देते कि उन्होंने हमें प्रकाशित किया है।

फिर भी कहते हो अपना प्रकाश स्वयं बनो। कुछ कहते हैं अप्प दीपो भव। अपना प्रकाश स्वयं बनो। नहीं। ये कहना अधिक उचित प्रतीत होता है कि स्वयं को दीपक बनाओ। यदि हम स्वयं दूसरे दीपकों से प्रकाश लेकर अपने आप को रोशन करने की दिशा में अग्रसर हो सके तो यह बड़ी बात होगी, बहुत बड़ी बात। स्वयं कर ही दूसरों तक प्रकाश पहुंचा सकेंगे। दीपक की सार्थकता भी इसी में है। वह स्वयं नहीं बन सकता लेकिन दूसरों के जलाने पर जरूर कुछ कर सकता है। वह स्वयं नहीं जल सकता लेकिन दूसरों के जलाने पर जरूर स्वयं प्रकाशित होकर दूसरों को भी प्रकाशित कर सकता है, उन्हें अंधेरे से बचा सकता है, उनका अज्ञान दूर कर सकता हैं इसी में निहित है संस्कृति की शाश्वतता भी।

अमर शहीद आर्य मुसाफिर पं० लेखराम

–वेदारी लाल आर्य

पं० लेखराम का जन्म ८ चैत्र संवत् १९१५ को अविभाजित पंजाब के जिला जेहलम की तहसील चकबाल के ग्राम सैय्यदपुर में महता तारा सिंह के गृह में हुआ था। ६ वर्ष की आयु में इन्हें उर्दू फारसी पढ़ने के लिए मदरसे में भेजा गया। कारण उस समय हिन्दुओं की पृथक से कोई पाठशाला नहीं होती थी। आप बहुत ही होशियार थे। फारसी के कठिनतम पाठों को भी कभी दुबारा नहीं पूछा इनकी हाजिर जबाबी से परीक्षक बहुत प्रसन्न रहते थे।

२१ दिसम्बर १८७५ को लेखराम के चाचा गण्डाराम ने १७ वर्ष की आयु में इन्हें पेशावर पुलिस में भर्ती करा दिया। उन्नति करते–करते वे सार्जेन्ट के पद पर पहुंच गए। एक सिक्ख सिपाही के सत्संग ने उनहें परमात्मा की उपासना का अभ्यास करा दिया। वे ब्रह्ममुहूर्त में स्नान कर उपासना में बैठ जाते थे। गीता पर किसी का भाष्य पढ़ते हुए इन्हें मुन्शी कन्हैयालाल अलखधारी के ग्रन्थों को देखने की उत्कण्ठा हुई। तत्काल ग्रन्थ मंगा लिया। इन गन्थों को पढ़कर इन्हें ऋषि दयानन्द के नाम और काम का पता लगा। समाचार पत्रों में उन दिनों ऋषि दयानन्द की धूम मची हुई थी। इसी के परिणामस्वरूप लेखराम जी ने सम्वत १९३७ के अन्तिम भाग में पेशावर में माई रन्जों की धर्मशाला में जहाँ वे रहते थे, आर्य समाज की स्थापना कर दी।

हृदस में उत्पन्न कुछ संशयों के समाधान हेतु और ऋषि दयानन्द का आशीर्वाद लेने हेतु ५ मई सन् १८८० को एक माह का अवकाश लेकर ११ मई को ऋषि दयानन्द के दर्शनार्थ अजमेर चल दिए। १७ मई को सेठ फतहमल की वाटिका में पहुंचकर ऋषि के दर्शन किए। उनकी अनुमति से उन्होंने दस प्रश्न पूछे थे। जिनमें से बाद में उन्हें ती ही स्मरण रह गए। अजमेर से वापस आकर दिन रात इन्हें धर्म प्रचार की धुन रहने लगी। आर्य माज पेशावर की ओर से उर्दू का मासिक पत्र 'धर्मोपदेश' प्रकाशित करना प्रारम्भ कर दिया और इसके सम्पादन तथा आर्थिक स्थिति का भार भी स्वयं ही वहन किया।

जून सन् १८८४ ई० में सार्जेन्ट लेखराम को दफ्तर पुलिस में बदल दिया गया। २४ सितम्बर १८८४ को त्यागपत्र देकर मनुष्यों के दासत्व से मुक्त होकर लेखराम अब पण्डित लेखराम बन गए और वैदिक धर्म के अनथक समर्पित सेवक बन गए।

३० अक्टूबर १८८३ को ऋषि दयानन्द ने निर्वाण प्राप्त किया। इस घटना ने पं० लेखराम को विचलित कर दिया। सारे विश्व को वैदिक धर्म के झण्डे तले लाने का अपना ही कर्तव्य समझ लेखराम धर्मवीर का पद प्राप्त करने की दिशा में अग्रसर हुए। आर्य जाति का कोई भी व्यक्ति यदि इसाई अथवा मुसलमान हो तो उसे बचाने का आर्य समाज पर विपक्षी का आपेक्ष का उत्तर देने का काम इनका था। सर्वप्रथम जम्मू के ठाकुर दास नायक हिन्दू को मुसलमान बनने से बचाने के लिए वे तीन चार बार गए और अन्ततः उसे विधर्मी होने से बचाने में सफल रहे।

सन् १८८६ के आरम्भ में लेखराम की योग्यता की धूम मच गई तकजीव बुराहीन अहमदिया के अब तक अप्रकाशित होने पर उसकी हस्तलिखित प्रतियां दूर–दूर तक पहुंच चुकी थीं। लेखराम ने इसी वर्ष मिर्जा की किताब सुरमा चरम आरिया का जबाब नुस्खा सख्त अहमदिया लिखा। इसके अतिरिक्त पादरी खड़गसिंह के छः व्याख्यानों के उत्तर भी लिखकर प्रकाशित किए और भी बहुत छोटी–छोटी पुस्तकें अवैदिक मतों के खण्डन में प्रकाशित की प्रचार का कार्य भी साथ–साथ चल रहा था। सन् १८८७ के प्रारम्भ में लेखराम को आर्य गजट फीरोजपुर का सम्पादक बना दिया गया।

ऋषि दयानन्द का अवसान हुए साढ़े चार वर्ष व्यतीत हो चुके थे आर्य जनता उनके जीवन चरित्र की मांग कर रही थी। मुल्तान की आर्य समाज की सम्यत्यानुसार पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा ने १ जुलाई १८८८ ई० के अधिवेशन में निश्चय किया कि ऋषि के जीवन वृत का अन्वेषणकरने के लिए पं० लेखराम को नियुक्त किया जाए। नवम्बर १८८८ में, आर्य गजट का सम्पादन छोड़कर पं० लेखराम को नियुक्त किया जाए। नवम्बर १८८८ में आर्य गजट का सम्पादन छोड़ कर पं० लेखराम ऋषि का जीवन वृत खोजने हेतु 'आर्य मुसाफिर' बन गए ऋषि जीवन का अन्वेषण उन्होंने लाहौर से प्रारम्भ किया। धर्म प्रचार भी साथ–साथ होता रहा। लाहौर से जालन्धर मथुरा होते हुए अजमेर पहुंचे, अजमेर में मुसलमानों ने बड़ा बखेड़ा मचा रखा था। उनके जोश को ठंडा कर यहां के आर्यों से 'वैदिक विजय पत्र मासिक' प्रकाशित कराया। लेखरामजी की प्रसिद्ध पुस्तक 'जिहाद' इसी में क्रमशः प्रकाशित हुई थी। यहाँ से नसीराबाद में शास्त्रार्थ करके घर होकर मेरठ पहुंचे। यहां 'नियोग वेवगान' छपवाया अन्वेषण कके क्रम में पंजाब और संयुक्त प्रान्त (अब उत्तर प्रदेश) का भ्रमण करने प्रयाग पहुंचे। ऋषि का स्थापित किया हुआ वैदिक यन्त्रालय उन दिनों यहीं था। पं० भीमसेन और पं० ज्वालादत्त इमसे कार्यरत थे। पं० लेखराम एक मास का ऋषि का पत्रव्यवाहर देखते रहे इसी समय कुछ प्रूफ देखते हुए लेखराम को पण्डितों की पोपलीला का पता चला। उन्होंने वेद भाष्य का एक छपा हुए अंक जलवा दिया और उसे पुनः संशोधन कर छपवाया। इनकी हलचल के परिणाम स्वरूप वेद भाष्य के अवलोकन का भार कुछ प्रसिद्ध आर्य पुरूषों पर डाला।

यहां से मिर्जापुर काशी होकर दानापुर १७ जनवरी १९८१ को पहुंचे। यहां आर्य समाज के नारघर से तार आया कि पण्डित जी हैं या नहीं। किसी शत्रु ने पण्डितजी के घर पर उनकी मृत्यु की सूचना भेज दी थी। तार का उत्तर दे दिया। यहां लेखरामजी ने खुदाबख्स लाइब्रेरी में से ४० पारे का कुरान देखा और उसके पिछले १० पारे में से कुछ नाट किया। खड़गविलास प्रेस से कवि वचनसुधा की फाइल लेकर ऋषि के जीवन वृत के सम्बन्ध में कुछ नोट किया। हयां के तत्कालीन मंत्री डॉ० मुन्नीलाल शाह ने जो पत्र स्वामी श्रद्धानन्द जी को लिखा था उससे ज्ञात होता है कि पण्डित लेखराम का विचार सत्यार्थ प्रकाश का उर्दू अनुवाद करने का था। वे स्वतंत्र रूप से अरब, मिस्त्र, अफगानिस्तान आदि देशों में जाकर वैदिक धर्म का प्रचार करना चाहते थे।

यहाँ से कलकत्ता होकर कुम्भ पर हरिद्वार पहुंचे। हरिद्वार से लाहौर होकर वैसाख १९४८ संवत में आर्य समाज के वार्षिकोत्सव में सम्मिलित होकर हैदराबद (सिन्ध) के एक रईस परिवार को मुसलमान होने से बचाया। इन्हीं दिनों उन्होंने 'क्रिश्चियन मत दर्पण' की तैयारी शुरू कर दी थी तथा 'तारीख ए दुनिया' तैयार कर लिया था।

साधु केशवानन्द के साथ शास्त्रार्थ करने आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब ने लेखराम को दिसम्बर १८९१ में सरमौर राज्य के नाहन भेजा। यहां के राजा के समक्ष केशवानन्द से लेखराम का शास्त्रार्थ हुआ। लेखराम के यहां चार याख्यान हुए। २१ मार्च सन् १८९२ को मियानी जिला शाहपुर में आर्य समाज की स्थापना करके ऋषि दयानन्द के जीवन के अनुसन्धान में लेखराम राजपूताना की दिशा में चल दिए।

बूंदी राज्य में ब्रह्मचारी नित्यानन्द और स्वामी विश्वरानन्द के शास्त्रार्थ की धूम मची थी। आर्य सामज ने उनकी सहायता के लिए लेखराम को भेजा। किसी ने रियासत होने के कारण अनिष्ट की आशंका प्रकट की। परन्तु पण्डित जी सिंह के समान गर्जना करते हुए बूंदी पहुंचे परन्तु किसी कारणवश यहां शास्त्रार्थ नहीं हो सका। सन् १८९२ के अक्टूबर, नवम्बर के मास के महीने उन्होंने ऋषि दयानन्द की जन्म भूमि की खोज में बिताए।

५ अगस्त सन् १८९३ को लेखराम जोधपुर के माहाराजा प्रताप सिंह वैदिक धर्म के अनुयायी तथा ऋषि दयानन्द के परम भक्त थे। परन्तु राजपूतों की वीरता हेतु वे मांस भक्षण अवश्य मानते थे। परन्तु लेखराम ने तर्क संगत वार्ता महाराज की इस शंका को निर्मूल कर दिया।

इन्हीं दिनों अमेरिका के शिकागो नगर की प्रदर्शिनी की तैयारियां हो रही थीं। आर्य समाज की ओर से कोई विशेष प्रतिनिधि भेजने पर विचार हो रहा था। लेखराम ने एक अपील प्रकाशित कर मार्ग व्यय और एक अंग्रेजी के सुयोग्य विद्वान की सेवा मांगी। यद्यपि उन्हें इसमें सफलता नहीं मिली परन्तु इससे उनका धर्म के प्रति उत्कृष्ट प्रेम सिद्ध होता है। पण्डित लेखराम १५ मई १८९५ को लाहौर से अपनी पत्नी को लेकर अपने घर पहुंचे। १८ मई को प्रातःकाल उनके घर पुत्र का जन्म हुआ। पण्डित जी ने उसका नामकरण पूर्ण वैदिक रीति से किया। २२ मई को पुनः अपनी यात्रा पर चल दिए। १२ जून १८९५ को उनके लघुभ्राता तोताराम का देहावसासन हो गया। इसी के कुछ दिनों पश्चात् उनके पिताजी की भी मृत्यु हो गई। परन्तु धर्म प्रचार और ऋषि दयानन्द के जीवन वृत में संलग्न लेखराम अपने घर नहीं पहुंचे। जब उनका पुत्र रोग शैय्या पर पड़ा था ये शिमला आर्य समाज के वार्षिकोत्सव पर व्याख्यान दे रहे थे। २६ अगस्त को जलन्धर वापस आए पुत्र कि चिकित्सा हो रही थी इसी मध्य उनके पुत्र की मृत्यु हो गई थी परन्तु पण्डित जी के मुखमण्डल पर किसी ने भी निराशा की रेखाएं नहीं देखी।

पण्डित जी द्वारा शुद्धि का जो चक्र चलाया जा रहा था ताकि भटके हिन्दू भाइयों को जो किसी कारणवश मुस्लमान बन गए थे पुनः वैदिक धर्म में वापिस आ सके। इसके कारण

शेष पृष्ठ ६ पर

पृष्ठ ६ का शेष

अमर शहीद आर्य ...

मुस्लमान उनसे शत्रुता रखने लगे थे और पण्डितजी की किसी न किसी प्रकार हत्या करना चाहते थे।

फरवरी १८६७ के मध्य एक काला गठे हुए बदन का भयानक नाटा युवक पण्डित लेखराम का पता पूछता हुआ उनके निवास स्थान पर पहुंचा और निवेदन किया कि वह दो वर्ष पूर्व हिन्दू था अब मुस्लमान हो चुका है तथा पुनः वैदिक धर्म में दीक्षित होना चाहता है। पण्डित जी इसके लिए सदा तत्पर रहते थे उन्होंने उसे बड़े प्रेम से बैठाया और आश्वस्त किया कि उसे शुद्ध कर लेंगे। पण्डितजी ने उसका अन्य विवरण जानने का प्रयास नहीं किया।

पण्डितजी ६ मार्च १८६७ को शाम ६ बजे अपने घर के खुले बरामदे में चारपाई पर बैठकर ऋषि के जीवन वृत की संकलित सामग्री को सिलसिलेवार लगा रहे थे तभी वह घातक नवयुवक उनकी बांई ओर की कुर्सी पर बैठ गया माताजी रसोई में थीं उनकी पत्नि दूसरे कक्ष में पढ़ रही थीं। पण्डित जी उस समय ऋषि दयानन्द की मृत्यु का अन्तिम दृश्य खींच रहे थे पत्र वहीं रख दिए और चारपाई पर जिधर घातक बैठा था उधर उतर कर आँख बन्द कर दोनों भुजाओं को ऊपर उठाकर अंगड़ाई लेने लगे। घातक इसी प्रकार की मुद्रा की तलाश में था। उसने लेखराम जी के पेट में छुरा घोंपकर घुमा दिया जिससे उनकी आंतें बाहर निकल आई। पण्डितजी इससे किंचिन्तमात्र भी विचलित नहीं हुए और किसी प्रकार का शोर भी नहीं मचाया। वरन धैर्य का परिचय दिया पण्डितजी ने अपने बायें हाथ से अंतडियां संभाली और दायें से घातक से लड़ते भिड़ते सीढ़ी तक जा पहुंचे और उसके हाथ से छुरी छीन ली। इतने में उनकी पत्नि लक्ष्मीदेवी जी बाहर आई और धर्मवीर को घातक के संभावित दूसरे वार से बचा लिया धर्मवीर की माता ने घातक के दोनों हाथ पकड़ लिए परन्तु घातक ने उनके हाथ से बेलन लेकर उनको भी दो तीन चोटें लगाई और हाथ छुड़ाकर भागने में सफल रहा।

पण्डितजी को शीघ्र ही अस्पताल पहुंचाया गया। छुरी लगने के पौन दो घंटे बाद सिविल सर्जन डॉ० पैरी साहब आए और दो घंटे तक कटी हुई आंतों को सिलते रहे। उन्हें आश्चर्य था कि इतनी देर तक इतनी अधिक मात्रा में रक्त निकलने पर भी यह जीवित कैसे हैं? पण्डितजी इस मध्य गायत्री मंत्र ओ३म् विश्वानिदेव मंत्र का जाप करते रहे।

पण्डितजी रात्रि डेढ़ बजे तक सचेत रहे। इस समय उन्हें न तो घरवालों की चिन्ता थी और न मृत्यु का भय। केवल परमात्मा का ही चिन्तन करते रहे। अपने सहयोगियों को अन्तिम सन्देश दे गए "आर्य समाज से लेखन का काम बन्द नहीं होना चाहिए। रात्रि लगभग दो बजे लेखराम जी अपना बलिदान देकर चिरनिद्रा में चले गए।

पृष्ठ ३ का शेष

महाशय धर्म पाल...

मधुर, पीयूष प्रदाता बनकर यशस्वी बना रहा है चन्द्रमा के ऊपर एक दाग दिखाई देता है लेकिन आपके यश में एक भी दाग नहीं है सूर्य की ऊर्जा तेज आपके जीवन में तेज शक्ति का संचारकर आपकी आयु वृद्धि में सहयोगी बन रहा है। वायु आपके प्राणायाम को शुद्ध बलवान बनाकर नवजीवन प्रदान कर रहा है आकाश की तरह विशाल रूपधारण कर पृथिवी की तरह धैर्य और क्षमा का सम्बल बनाया है आपके ऊपर लोगों का विश्वास उत्तरादायित्व का बोध कितना है सामान्य व्यक्ति उसे सहन नहीं कर सकता लेकिन आपने अपने धैर्य से आल्मबल से उसे स्वीकार कर निरन्तर प्रगति प्रदान की है जैसे पारस मणि के विषय में सुना जाता है वहीं अपना रूप छोड़कर स्वर्ण का रूप धारण कर लेते थी उसी प्रकार आज हम साक्षात् अनुभव कर सकते हैं कि जहां भी आपके चरण पड़ जायें जहां भी आपके पवित्र कर कमलों का स्पर्श हो जाये वी स्वर्णवत् मूल्यवान स्वर्णवत् तेजस्वी स्वर्णवन् चमकदार बनकर प्रभावित करती है स्वर्णभस्म जैसे मृतवत् व्यक्ति को संजीवनी बनकर नया जीवन देती है वैसे ही वह संस्था भी नवजीवन प्राप्त कर ऊर्जावान संस्था बन कर समाज में प्रकाशित–तेजस्वी और चमक प्राप्त कर नेतृत्व क्षमता को प्राप्त करने में आपका आशीर्वाद प्राप्त करती है। आमके जीवन की मधुरता से ही सभी आपके आत्मीयजन आपके दर्शन और आपके आशीर्वाद के लिए लालायित रहते हैं। सदैव प्रसन्न रहना आपके जीवन का प्रसाद है अतः जो आपका अनुभव है वह आपके जीवन की पहेली है उदाहरण है गुरूकुलीय परम्परा को अपना आशीर्वाद प्रदान करते रहते हैं वैदिक जीवन कितना प्रेरक हो सकता है आपके जीवन से लोग शिक्षा ले सकते हैं। आपके हितैषी–आपके सहयोगी जो समय–समय 'पर सत्परामर्श देकर आपको सम्भालते रहते हैं वे भी सौभाग्यशाली है। अपनी दिनचर्या में योग–प्राणायाम दैनिक यज्ञ–स्वाध्याय–ईश्वरभक्ति, भजन, सन्ध्यासंगीत, वैदिक सत्संग सदाचार, सद्व्यवहार, सेवा सम्मान सात्विक आहार ही मुख्य रूप से आपके दीर्घ जीवन का रहस्य हैं यह प्रमाण के रूप में आज भी लोग आपको उसी रूप में स्वीकार कर रहे हैं यह आपके पूर्व जन्मों के पुण्यों का ही सुफल है जो इस जन्म में उन्हें पानी–खाद से ओर पोषित कर लिया है।

आपके द्वारा समाज सेवा के रूप में चलाये जा रहे कार्यक्रम एक अभियान है महर्षि के स्वप्न साकार करने का आन्दोलन है वैदिक संस्कृति का मूलाधार है गुरूकुलीय प्रणाली के लिए पोषण आहार है वेद प्रचार के लिए ऊर्जावाहन (वेदप्रचार वाहन) उपहार है। प्रभुप्रदत्त सौभाग्य सभी आर्य महानुभाव प्राप्त कर सके उसके लिए आपके सद्व्यवहार से प्रेरणा लेकर महर्षि देव दयानन्द जी के मानस परिवार को "कृणवन्तो विश्वमार्यम् के रूप में परिवर्धित किया जा सकता है। मात्र आपके इस शिव संकल्प को सुदृढ़ करने की आवश्यकता है।

मैं म० धर्मपाल जी आर्य के शतायु जीवन एवं आरेण्ज के लिए प्रार्थना करता हुआ आपके शब्द रूपी पुष्पों की माला से आपको सन्यासी होने के नाते अपनी शुभकामनाऐं प्रेषित कर रहा हूँ। आशा है स्वीकार करेंगे पुनः आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० एवं गुरूकुल पूठ, परिवार की ओर से बहुत–बहुत अभिनन्द बधाई स्वीकार हो।

शोक संवेदना

२. बड़े दुःख के साथ आप सभी को सूचित किया जाता है, कि आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, लखनऊ के पूर्व कर्मचारी श्री उमेश कुमार त्रिपाठी काफी दिनों से अस्वस्थ चल रहे थे, काफी लम्बी बीमारी के बाद दिनांक ०६–०३–२०१८ को रात्रि लगभग १२.३० बजे मृत्यु हो गयी। श्री त्रिपाठी वर्तमान में विज्ञान एवं टेक्नोलॉजी विभाग उ०प्र०, लखनऊ में कार्यरत् थे। श्री त्रिपाठी जी की मृत्यु से परिवार एवं समाज को अपूरणीय क्षति है,। श्री त्रिपाठी जी अपने पीछे पत्नी एवं एक पुत्री छोड़कर गये हैं।

हम आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, लखनऊ ईश्वर से प्रार्थना करते हैं, कि वे दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें। और शोक संतृप्त परिवार को इस असहाय दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

–कृष्ण मुरारी यादव, कार्यालय अधीक्षक

आर्य समाज बहराइच के प्रधान जी के बड़े भाई जी का निधन

बड़े दुःख के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि बहराइच के प्रधान श्री रमेन्द्र देव सिंह जी के बड़े भाई महेन्द्र प्रातप सिंह का निधन दिनांक २८/२/२०१८ हो गया आर्य मित्र परिवार परमात्मा से कामना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

पं. नन्दलाल निर्भय को पुत्र शोक

आर्य जगत के प्रख्यात वैदिक विद्वान सिद्धहस्त लेखक ओजस्वी कवि पं० नन्दलाल मिर्भय सिद्धान्ताचार्य, ग्राम बहीन (पलवल) हरियाणा के ज्येष्ठ पुत्र ब्रह्मदेव आर्य का गत दिनां हृदयगति रूक जाने से पार्क अस्पताल फरीदाबाद (हरियाणा) में निधन हो गया। जिसका शान्ति यज्ञ स्वयं के निवास स्थान पर किया गया दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं सदगति प्रदान करें और परिवार को यह असहनीय दुःख सहने की क्षमता प्रदान करें।

जगदीश चन्द्र आर्य, महामंत्री पलवल, हरि०

पृष्ठ १ का शेष

विश्व हितैषी ....

इसी प्रकार अस्पृश्यता नारी उत्थान तथा राष्ट्रीय गौरव पर महर्षि ने विशेष बल देकर भारत को विश्व की सबल शक्ति बनाने और मानवता का नेतृत्व करने के योग्य बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किया। महर्षि से पूर्व समकालीन नेताओं राजा राममोहन राय विद्यासागर, केशवचन्द्र सेन, सर सैयद अहमद खां आदि सब की दृष्टि सामाजिक और राष्ट्रीय उत्थान तक थी परन्तु, महर्षि की दूर और दिव्य दृष्टि में समस्त मानव जाति का हित चिन्तन समाविष्ट था। महर्षि अनुभव करते थे कि भारत का उत्थान मानव मानव जाति का उत्थान होगा और भारत के पथ प्रदर्शन में विश्व मानवता एक विश्व रचना के वैदिक स्वरूप की ओर बढ़ सकेगी।

महर्षि के इस विश्ववादी दृष्टिकोण की स्थापना के बाद आज आर्यसमाज के सम्मुख गम्भीर दायित्व है कि क्या हम विश्वादी बन सके हैं या विश्व को आज की परिस्थितियों में कोई मार्ग दर्शन आर्यसमाज दे सका है या देने में समर्थ हैं। इस सवाल पर गम्भीर चिन्तन होना चाहिए।

महर्षि को भावना के अनुसार प्रत्येक देश के निवासी को स्वतन्त्रता का अधिकार है और उसकी उन्नति से उस देश वासियों को पूरा योगदान देना चाहिए, परन्तु अन्ध राष्ट्रवाद बन कर सब देशवालों को विश्वबन्धुत्व की भावना बढ़ानी चाहिये। आर्यसामज का कार्य भारत तक ही संकुचित न रह जाय, इस ओर हमें सदैव सचेतन रहना चाहिए।

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर/फैक्सः ०
का० प्रधान- ०६४१२७४४३४१, मंत्री- ०६८३७४०२१६२, व्यवस्थापक- ६३८०६२२२०५
ई-मेल : apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,
.....
.....

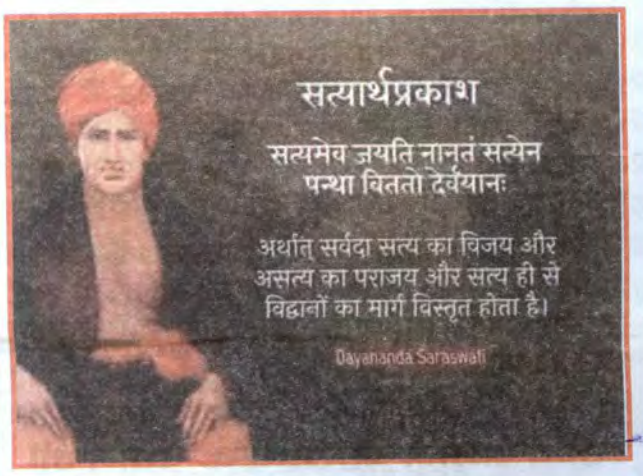

घरेलू औषधियाँ-

आग से जलना–

१. आलू को अत्यन्त बारीक पीसकर जले हुए स्थान पर गाढ़ा–गाढ़ा लेप कर दें, जिससे इस स्थान को हवा न लगे। तुरन्तु आराम होगा।

२. जले हुए स्थान पर शहद का लेप करना भी जलन को तुरन्त दूर करता है।

३. केवल नारियल का तेल लगाना भी अत्यन्त लाभदायक है।

४. सुहागा सफेद १ भाग, पानी २० भाग। सुहागे को पानी में घोल दें। इस पानी से जले हुए घावों को धोने से घाव बिल्कुल साफ हो जाते हैं।

५. आग से जल जाने पर हींग अत्यन्त आश्चर्जनक और अद्वितीय दवा है। जब कोई व्यक्ति आग से जल जाए तब असली हींग को पानी में घोलकर जले स्थान पर दिन–रात में ४–५ बार लगाएँ। प्रभुकृपा से इसको लगाते ही जले स्थान पर चैन पड़ जाता है और फफोला भी नहीं पड़ता।

आग से जलना–

१. अकरकरा और नौसादर को पीसकर तालु मुँह में खूब रगड़ने से मुँह में ऐसी शून्यता उत्पन्न हो जाती है कि यदि मुख में अंगारे भी भर लिये जाएँ तो भी मुँह नहीं जलता।

आधा–सीसी, आधे सिर का दर्द–

१. जमालगोटे के बीच को पत्थर पर घिसकर तुलसी के पत्ते पर अथवा मोमी कागज के चवन्नी के बराबर टुकड़े पर लगाकर जिस ओर दर्द हो उधर की कनपटी पर लगाकर सुला दो। प्रातः गन्दे पानी का फफोला उभरा हुआ होगा। सुई से इसका पानी निकाल दें।

खाने के लिए उस्तेखदूस ताजा ३ ग्राम बारीक पीसकर शहद में मिलाकर चटाएँ। पहले ही दिन में आराम हो जाता है। सहस्रों बार का अनुभूत योग है। तेल, अचार, लस्सी, खटाई, चावल और केला न खाएँ। मैथुन से बचें।

२. उस्तेखदूस ३ ग्राम, धनिया की गिरी ३ ग्राम, काली मिर्च ३ ग्राम–तीनों की ठण्डाई की भाँति घोट–पीसकर और २५० ग्राम पानी में शहद मिलाकर सूर्योदय से पूर्व तीन दिन पिलाएं। आधा–सीसी का दर्द मिट जाएगा।

३. रीठे का छिलका पानी में पीसकर २–२ बूँद नाक में टपकाने से आधा–सीसी का दर्द मिट जाएगा।

४. नौशादर पपड़िया १२ ग्राम को अत्यन्त बारीक करके एक बोतल पानी में घोलकर रख लें और बोतल पर १६ चिन्ह (निशान) लगा लें। आधा–सीसी का दर्द आरम्भ होने से एक घण्टा पूर्व एक खुराक पिलाएं, दर्द बन्द होते ही फिर दूसरी खुराक दें। यदि दर्द हर समय रहता हो तो प्रातः सायं एक–एक खुराक दें। हर प्रकार के आधा–सीसी के दर्द के लिए रामबाण है।

५. खानेवाले तेज़ तम्बाकू के पत्तों को सुरमें की भाँति बारीक पीस लें, फिर जिस ओर दर्द हो उससे उल्टी ओर की आँख एक सलाई अच्छी प्रकार लगा दें। आधा–सीसी के दर्द को दूर करने के लिए अद्वितीय है। एक बार लगाने से पूर्ण लाभ न हो तो एक सलाई पुनः लगा सकते हैं। २–३ घण्टे पश्चात् आँख पर मक्खन लगा सकते हैं।

आयुर्वेदिक चाय–

गेहूँ के आटे को छानने पर जो छान (चोकर, दलिया सा) शेष बचता है, इसे डाक्टरों ने बहुत लाभदायक बताया है। १० ग्राम छान या चोकर को एक प्याले पानी में अच्छी प्रकार उबालकर कपड़े से छान लें। फिर इसमें दूध और मीठा मिलाकर प्रातः, सायं चाय की भांति पिएं। इसके निरन्तर सेवन से शरीर दृढ़ और शक्तिशाली बनता है। यदि इसमें बादाम की पांच गिरियां अच्दी तरह रगड़कर और मिला दी जाएं तो मनुष्य बूढ़ा नहीं होता, दिमाग तेज हो जाता है। नज़ला, जुकाम और सिरदर्द के लिए गुणकारी है। इससे सस्ती और गुणकारी वस्तु मिलनी दुर्लभ है।

नारी सम्मान में मनुस्मृति का उद्घोष

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः॥
मनुस्मृति अध्याय ३, श्लोक ५६

जिस कुल में नारियों की पूजा अर्थात् सत्कार होता है, उस कुल में देवता अर्थात् दिव्य भोग और उत्तम संतान होते हैं। और जिस कुल में स्त्रियों की पूजा नहीं होती है, वहाँ जानो उस कुल की सब क्रिया निष्फल है।

असत्य का समर्थन

सृष्टि के आरम्भ में सत्युग का समय था। एक दिन की बात है कि देवताओं ने ऋषियों से कहा, "श्रुति कहती है कि यज्ञ में अज (बकरे की) बलि होनी चाहिए। अज बकरे का नाम है, फिर आप लोग उसका बलिदान क्यों नहीं करते?"

ऋषियों ने कहा, "देवताओं को मनुष्यों की इस प्रकार परीक्षा नहीं लेनी चाहिए और न उनकी बुद्धि को भ्रम में डालना चाहिए। बीज का नाम ही अज है। बीज के द्वारा अर्थात् अन्नों से ही यज्ञ करने का वेद निर्देश देता है। यज्ञ में पशुवध सज्जनों का धर्म नहीं है।"

परन्तु देवताओं ने ऋषियों की बात स्वीकार नहीं की। दोनों पक्षों में इस प्रश्न पर विवाद बढ़ गया। उसी समय उधर से राजा उपरिचर अपनी सेना के साथ कहीं से आ रहे थे। उन प्रतापी नरेश को देखकर देवताओं तथा ऋषियों ने उन्हें मध्यस्थ बनाना चाहा।

उनके समीप जाकर ऋषियों ने पूछा, "यज्ञ में पशु–बलि होनी चाहिए या नहीं"?

राजा उपरिचर ने पहले यह जानना चाहा कि देवताओं तथा ऋषियों में किसका क्या पक्ष है। दोनों के विचार जान कर राजा ने सोचा, देवताओं की प्रसन्नता प्राप्त करने का यह अवसर मुझे नहीं खोना चाहिए।

अवसर का लाभ उठाकर उपरिचर ने निर्णय सुनाते हुए कहा, " यज्ञ में पशुबलि होनी चाहिए।"

उपरिचर का निर्णय सुन कर महर्षियों को क्रोध आ गया और वे यह भी समझ गये कि उपरिचर ने ने सत्य–असत्य का निर्णय न कर देवताओं के साथ पक्षपात किया है। अतः उन्होंने कहा, "महाराज! आपने सत्य का निर्णय न करके पक्षपात किया है, असत्य का समर्थन किया है, अतः हम शाप देते हैं कि अब तुम कभी देवलोग में नहीं जा सकोगे। पृथिवी के ऊपर भी तुम्हारे लिए स्थान नहीं होगा, तुम पाताल लोक में धँस जाओगे।"

उपरिचर हताश हो गया। देवताओं को उस पर दया आये तो कहा, "महाराज! ऋषियों के वचन मिथ्या करने की शक्ति हममें नहीं है। हम लोग तो श्रुतियों का तात्पर्य जानने के लिए हठ किये हुए थे। पक्ष तो ऋषियों का ही सत्य है। किन्तु हम लोगों से अनुराग होने के कारण आपने हमारा पक्ष लिया। यह पक्षपाथ ही था, उसी का यह परिणाम है कि आपको पाताल लोक में जाना पड़ रहा है।"

पक्षपातपूर्ण न्याय का यही परिणाम होता है।

संकलन– शैलेन्द्र सिंह
आर्य मित्र परिवार

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक – मुद्रक –प्रकाशक –श्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शारदा प्रिंटिंग प्रेस, माडल हाउस, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है– सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।